विचार बिन्दु

अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। –अथर्ववेद

भारत को रोगों की वैश्विक राजधानी के कलंक से मुक्त करने हेतु घर-घर औषधि योजना

हाल ही में एक ऐसे व्यक्ति से मुलाकात हुई जो अत्यंत पढ़े-लिखे परिवार से है, और औसत आमदनी के सन्दर्भ में भारत के ऊपर के 5 प्रतिशत लोगों में शामिल है, लेकिन 55 साल की उम्र में ही ऑटोइम्यून डिजीज, मेटाबोलिक सिंड्रोम, डायबिटीज और कॉग्निटिव इंपेयरमेंट जैसी बीमारियों का शिकार है। यह व्यक्ति उस क्लिनिकल स्थिति में फंस गया है जिसे मल्टीमॉर्बिडिटी कहा जाता है और उसे मुट्ठी भर गोलियां खानी पड़ती हैं क्योंकि इस पॉलीफार्मेसी के बिना यह व्यक्ति बमुश्किल ही जीवित रह पायेगा। अगर यह व्यक्ति अपनी डायबिटीज को नियंत्रण में नहीं करता तो अगले 10 वर्ष में कम से कम 26 प्रकार की क्लिनिकल समस्याओं का शिकार होगा और परिवार की सारी आमदनी स्वास्थ्य को संभालने में खर्च करेगा। इसमें ऑटोइम्यूनिटी और कॉग्निटिव इंपेयरमेंट को संभालने का खर्चा भी जोड़ लें तो धनी होते हुये भी यह व्यक्ति अपनी सारी कमाई और पेंशन दवाई में खर्च करने के बावजूद उन 63 प्रतिशत लोगों में शामिल होगा जो समय पूर्व मृत्यु का शिकार हो रहे हैं। ध्यान दीजिये, यह व्यक्ति केवल अपने परिवार पर ही बोझ नहीं है बल्कि देश पर भी बोझ है क्योंकि ऐसे लोगों के कारण ही भारत गैर-संचारी रोगों की वैश्विक राजधानी बनता जा रहा है। ऐसी दुर्दशा में इस व्यक्ति को स्वास्थ्य-साक्षर बनाना और घर-घर औषधि योजना जैसे अद्वितीय नवाचार की मदद से संकट से उबारा जा सकता है। यदि ऐसा व्यक्ति इन नवाचारों से अपने आप को स्वस्थ कर लेता है तो परिवार के कल्याण के साथ-साथ देश का भी कल्याण होगा। आज आप भारत के ऊपर बीमारियों के बोझ पर प्रकाशित शोधपत्रों का विश्लेषण करें तो एक बात बिल्कुल साफ हो जाती है कि ऐसे पढ़े-लिखे किन्तु स्वास्थ्य-निरक्षर लोगों के कारण ही भारत गैर संचारी रोगों की राजधानी होता जा रहा है।

(देखें, वी.आर. वर्मा इत्यादि, बीएमसी पब्लिक हेल्थ, 21(1): 881, 2021; आर. सागर इत्यादि, द लैंसेट साइकैट्री, 7(2): 148-161, 2020; डी. प्रभाकरन इत्यादि, द लैंसेट ग्लोबल हेल्थ, 6(12): ई 1339-1351, 2018)।

लम्बे समय से स्वास्थ्य बजट का 97 प्रतिशत बायो-मेडिकल चिकित्सा पद्धति में खपाकर भी रोगों की वैश्विक राजधानी बनता जा रहा देश यह क्यों नहीं समझ पा रहा है कि आयुर्वेद की अगुआई के बिना निरोगी भारत की कल्पना अर्थहीन छलावा है। आयुर्वेद के बिना भारत का कोई परिवार या समाज निरोगी नहीं रह सकता। तमाम ज्ञात-अज्ञात कारणों से निरोगी परिवार, समाज या राज्य की कल्पना वर्तमान में ऐसे दर्शन पर आधारित है जिसमें बीमार व्यक्ति को उपचार के द्वारा स्वस्थ कर वापस स्वास्थ्य प्रदान कर कर्तव्यों की इतिश्री कर ली जाती है। यह रणनीति आवश्यक तो है परंतु निरोगी राज्य की कल्पना को साकार करने के लिये अपर्याप्त है। निरोगी राज्य की कल्पना, सिद्धांत, क्रियान्वयन और परिणाम केवल मरीजों की ओर ही सारी शक्ति केंद्रित कर साकार नहीं किये जा सकते। निरोगी राज्य की कल्पना तब साकार होती है जब स्वास्थ्य-साक्षरता और घर-घर औषधि योजना जैसे कार्यक्रमों से स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा की जाये।

आयुर्वेद की इस रणनीति का लाभ यह है कि आने वाले समय में जब नये कोहोर्ट या जत्थे समय बीतने के साथ बीमारी में नहीं फंसते तब जनसंख्या में निरोग रहने वालों के संख्या बढ़ने लगती है।

आइये कुछ उदाहरण देखते हैं। तथाकथित आधुनिक चिकित्सा पद्धति को लम्बे समय से स्वास्थ्य बजट का 97 प्रतिशत देने के बावजूद 195 देशों के बीच स्वास्थ्य संबंधी सतत विकास लक्ष्य में भारत का 145वां स्थान है। वर्ष 2018 में भारत और अमेरिका के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित साझा शोध के अनुसार वर्ष 1990 से 2016 के मध्य के 26 वर्षों में भारत में हृदय रोग से होने वाली मौतों में 34 प्रतिशत बढ़त हुई है, जबकि अमेरिका में यह दर 40 प्रतिशत कम हुई है। जर्नल ऑफ़ दि अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी (72.1:79-95, 2018) में प्रकाशित इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्ष 2016 में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में क्रमशः इन बीमारियों के कारण अनुमानित 62.5 और 12.7 मिलियन वर्ष का जीवनकाल नष्ट हुआ। इनमें इस्चेमिक हार्ट डिजीज और स्ट्रोक 15 से 20 प्रतिशत मृत्यु के लिये जिम्मेवार हैं। भारत में प्रत्येक एक लाख जनसंख्या में 5,681 लोग कार्डियोवैस्कुलर बीमारी से पीड़ित हैं। कुल संख्या के रूप में देखें तो भारत में 54.6 मिलियन लोग कार्डियोवैस्कुलर बीमारी से पीड़ित हैं, जो अमेरिका के 33.6 मिलियन लोगों की तुलना में 70 प्रतिशत ज्यादा है। प्रश्न यह है कि भारत में बढ़त क्यों और अमेरिका में घटत क्यों? इसका उत्तर आप केवल उस रणनीति में पा सकते हैं जिसकी चर्चा हमने इस आलेख के प्रारंभ में किया है।

दुर्भाग्य है कि समकालीन समाज आयुर्वेद की औषधियों को किनारे कर बीमारों की बीमारी दूर करने में पूरी ताकत और 97 प्रतिशत धन केवल आधुनिक चिकित्सा पद्धति में नष्ट कर रहा है। नष्ट क्यों? क्योंकि, जैसा हमने पहले कहा, तथाकथित आधुनिक चिकित्सा पद्धति में लम्बे समय से 97 प्रतिशत धन खपाकर भी भारत को स्वस्थ नहीं रखा जा सका। हम रोगों की वैश्विक राजधानी बन गये हैं।

भारत में कुल होने वाली मृत्यु की संख्या में से 60 प्रतिशत से अधिक केवल गैर-संचारी रोगों के कारण है। देश के अस्पतालों में चिकित्सार्थ भर्ती होने वाले कुल मरीजों में 40 प्रतिशत गैर-संचारी रोगों के होते हैं। भारतीय परिवारों, समाज और सरकार को इन बीमारियों की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था को वर्ष 2030 के पूर्व गैर-संचारी रोगों के कारण 4.58 लाख करोड़ डॉलर की हानि हो सकती है।

मानसिक बीमारियों का कुल वैश्विक बोझ कुल 32.4 प्रतिशत इयर्स लिव्ड विद डिसेबिलिटी और कुल 13 प्रतिशत डिसेबिलिटी एडजस्टेड लाइफ इयर्स या विकलांगता-समायोजित जीवन-काल के बराबर है।

इनमें से एक तिहाई प्रकरण केवल चीन और भारत में हैं जो कि सभी विकसित देशों से अधिक हैं।

और तो और, वर्ष 2013 से 2025 के बीच मानसिक, न्यूरोलॉजिकल और मादक द्रव्यों के विकारों के बोझ में चीन में 10 प्रतिशत और भारत में 23 प्रतिशत बढ़ने की आशंका है।

अमेरिका में योग और आयुर्वेद का 28 से 30 बिलियन डालर का बाज़ार खड़ा है। योग और आयुर्वेद जैसे विशुद्ध भारतीय विचार पर अमेरिकी अर्थव्यवस्था इतनी क्यों मेहरबान हो रही है? अगर इस धन का अंदाज़ा न लग रहा हो तो तुलना कर के समझ लीजिये कि वर्ष 2011 में भारत में एफडीआई की आवक केवल 36.5 बिलियन डालर ही थी। यह भी जान लीजिये कि विश्व में केवल 65 देश ही ऐसे हैं जिनका जी.डी.पी. 80 बिलियन डॉलर से ऊपर है।

केवल मॉडर्न मेडिसिन के भरोसे तो अमेरिका जैसे दिग्गज और विकसित देश ही स्वस्थ नहीं रह पाये, तो भारत का क्या कहना। पर भारत के नागरिक अभी भी आयुर्वेद और योग की हैसियत को नहीं समझ पाये। एक तरफ जहाँ दुनिया योग, आयुर्वेद और उससे जुड़े परचून में छप्पन हजार करोड़ रुपये या 80 बिलियन डॉलर का भारी-भरकम बाज़ार खड़ा कर चुकी है, वहीं भारत के नागरिक अभी भी आयुर्वेद और योग जैसी विधाओं को कोई विशेष महत्त्व नहीं देते। इसी प्रकार जहाँ आज दुनिया स्वास्थ्य के लिये वेलनेस टूरिज्म, जिसमें आयुर्वेद की चिकित्सा के लिये आने वाले पर्यटक भी सम्मिलित हैं, से जुड़ी अर्थव्यवस्था में 438.6 बिलियन डॉलर का वैश्विक बाजार खड़ा कर चुकी है, वहीं भारतीय समाज आज भी मॉडर्न मेडिसिन में अपने स्वास्थ्य बजट का 97 प्रतिशत फूंकते हुये तमाम रोगों की वैश्विक राजधानी बनकर भी चिंतित नहीं है।

दुनिया भर की सरकारें अपना काम करती रहती हैं और करना भी चाहिये। सरकारें इस भ्रम में जीतीं है कि यह उनकी मजबूरी है कि उन्हें सबसे पहले बीमार व्यक्तियों के उपचार को प्राथमिकता देनी पड़ती है। सरकारों और उनके अफसरों के इस भ्रम को टिकाऊ-सत्य बनाने में आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों से जुड़ी दवा कंपनियां जी जान से जुटी रहती हैं। क्यों? क्योंकि लोगों के बीमार पड़ने में ही धन कमाया जा सकता है। बीमार हो जाने के बाद मौत की ओर बढ़ती जनसंख्या पर टिकी इन वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के बाज़ार में धनवर्षा होती है। जबकि आयुर्वेद का सिद्धांत इसके ठीक उलट है। जैसा कि हम बता चुके हैं, आयुर्वेद में स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा को प्राथमिकता दी जाती है। यह प्राथमिकता कोई संयोग मात्र नहीं है बल्कि दीर्घकालिक अनुभवजन्य ज्ञान के आधार पर प्राचीन भारत के ऋषि-वैज्ञानिकों द्वारा दिया गया एक ऐसा ठोस सिद्धांत है जो आज भी यथावत उपयोगी है। किसी परिवार के सभी सदस्य जो आज बिल्कुल स्वस्थ हैं, यदि उनमें ऐसा निवेश किया जाये जिससे उनके स्वास्थ्य का अनुवर्तन होता रहे तो स्वाभाविक है कि वह परिवार कभी बीमारी में नहीं गिरेगा। बस इतना ही करना है। यही आयुर्वेद का सिद्धांत है। जैसा कि हमने पहले कहा, आयुर्वेद का दूसरा सिद्धांत बीमारों की बीमारी दूर करना है। कीजिये, लेकिन आयुर्वेद को पीछे रखकर नहीं बल्कि आयुर्वेद को प्राथमिकता देते हुये अन्य पद्धतियों की मदद लीजिये।

दुर्भाग्य है कि समकालीन समाज आयुर्वेद की औषधियों को किनारे कर बीमारों की बीमारी दूर करने में पूरी ताकत और 97 प्रतिशत धन केवल आधुनिक चिकित्सा पद्धति में नष्ट कर रहा है। नष्ट क्यों? क्योंकि, जैसा हमने पहले कहा, तथाकथित आधुनिक चिकित्सा पद्धति में लम्बे समय से 97 प्रतिशत धन खपाकर भी भारत को स्वस्थ नहीं रखा जा सका। हम रोगों की वैश्विक राजधानी बन गये हैं।

जब तक निरोगी परिवार, निरोगी समाज और निरोगी राज्य की कल्पना में मन, वाणी, और कर्म से आयुर्वेद को प्राथमिकता नहीं दी जायेगी, तब तक स्थिति बदलने के आसार नहीं हैं। दुर्भाग्य है कि भारत के नागरिक और नीति-निर्माता दोनों ही आयुर्वेद के साधारण किंतु अत्यंत प्रभावशाली सिद्धांत को समझने में पूर्णतया असफल रहे। असल में हमने आयुर्वेद को इतना उपेक्षित किया कि आज वैद्यों के पास ना तो पर्याप्त औषधियां उपलब्ध हैं और ना ही पर्याप्त सुविधायें उन्हें प्रदान की गई हैं। एलोपैथी के प्रति देश के अंधे मोह के पक्ष में ना तो अभी कोई प्रमाण है और ना ही कोई इस तरह का अनुभव उपलब्ध है जिससे यह विश्वास किया जा सके कि भारत में आने वाले समय में स्वास्थ्य सेवायें केवल आधिनुक चिकित्सा पद्धति की मदद से बेहतर की जा सकेंगी।

अज्ञान के अन्धकार से बाहर ज्ञान के उजाले में आइये। इससे पहले कि भारत के नागरिकों का स्वास्थ्य विध्वंश हो जाये, चेत जाइये। आयुर्वेद के बिना निरोगी राज्य या समाज की कल्पना सिर्फ़ और सिर्फ़ आत्म-छलावा है। सबसे पहले स्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ रखने के लिये आयुर्वेद में पर्याप्त निवेश को प्राथमिकता दीजिये, उसके बाद बीमारों की बीमारी दूर करने हेतु आयुर्वेद को प्राथमिकता देते हुये अन्य चिकित्सा पद्धतियों की मदद लीजिये। निरोगी राज्य या समाज की कल्पना साकार करने हेतु राजस्थान सरकार की तरह पूरे देश में घर-घर औषधि योजना जैसे नवाचारों में निवेश और क्रियान्वयन अनिवार्य है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

266वीं जयन्ती पर विशेष

सतनामी पंथ के प्रवर्तक - गुरु घासीदास का दर्शन अमर रहेगा

सत्य, अहिंसा व समानता के महान् सन्त गुरु घासीदास का जन्म 18 दिसम्बर 1756 को ग्राम-विरोधपुरी, जिला-बलौद (छत्तीसगढ़) वर्तमान रायपुर (मध्य प्रदेश) के एक गरीब-अछूत परिवार में पिता महंगूराम तथा माता अमरौतिन के घर में हुआ था। घासीदास ने बाल्यकाल से ही मराठ (सवर्णों) के अन्याय अत्याचारों के कड़वे अनुभव सहन किये थे। बड़े होने पर वह सामाजिक भेदभाव, छुआछूत, पशु हिंसा, मूर्तिपूजा का विरोध करते थे। उन्होंने समाज के शोषित-अछूतों को समान-मानवीय अधिकार होने का समर्थन किया था।

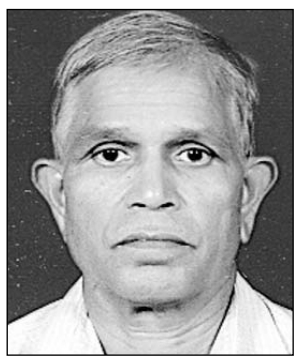

यादराम सिंह यादव

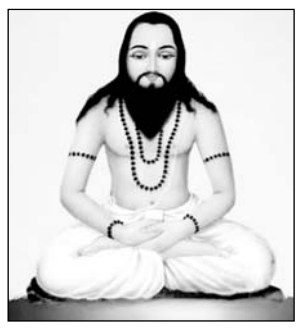

सामाजिक विषमताओं एवं बुराईयों को दूर करने के लिए उन्होंने सर्वप्रथम जगन्नाथपुरी (छत्तीसगढ़) की यात्रा की। अपने गांव लौटने पर उन्होंने सतनाम विचारधारा की घोषणा की। गुरु घासीदास ने लोगों में ईमानदारी, परिश्रमी तथा भाईचारा बनाने के लिए 'सतनामिन' नियम बताए। अपनी नयी सतनामी विचारधारा में समाज में ब्राह्मणों को सर्वोच्च मानने से इन्कार किया।

गुरु घासीदास के अनुसार उनके नये पंथ में सभी इंसान बराबर हैं। सत्य ही ईश्वर है, जो निर्गुण एवं निराकार हैं तथा सर्वव्यापी हैं।

उन्होंने अपनी विचारधारा को हरेक मनुष्य में प्रचारित किये बिना, समाज में पूर्णतः सुधार होना असंभव बताया। इसके लिए उन्होंने अपने सतनामी पंथ को मानने वालों को सर्वप्रथम नशा (शराब) को निषिद्ध किया तथा पशु हिंसा व बध नहीं करने को कहा। उन्होंने मांसाहार त्याग कर शाकाहार भोजन अपनाने का नया सिद्धान्त दिया। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक व्यवस्था सुधारने के लिए सात दिव्य सन्देश तथा 42 अमृतवाणियाँ दी थी। उनमें आडम्बर तथा अन्धविश्वास को छोड़ने की बात कही थी।

गुरु घासीदास के सात दिव्य संदेश– 1) सतनाम को मानो, सत्य ही ईश्वर है। 2) सभी जीव समान है, जीव हत्या पाप है तथा पशु बलि अंधविश्वास है 3) मांसाहारी मत बनो, नशा मत करो। 4) मूर्ति पूजा मत करो। 5) दोपहरी में हल मत जोतो, बैलों पर दया करो। 6) परायी नारी को माता-बहिन मानो। आचरण की शुद्धता पर जोर दो। 7) चोरी करना पाप है, हिंसा करना पाप है। सादा जीवन उच्च विचार रखो।

सन्त गुरु घासीदास भारत की सन्त परम्परा में सर्वोपरि थे। उनके पंथ में सत्य से साक्षात्कार करना ही जीवन का परम लक्ष्य माना है। उन्होंने समाज के लोगों में एकता, भाईचारे तथा समानता का संदेश दिया। जिससे उच्च वर्गों विशेषकर ब्राह्मणों की कर्मकाण्डी व्यवस्था से दुखी लोगों में सनातनी पंथ से नयी जागृति आयी। उनके सात वचन-सत्य सिद्धान्त के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

उन्होंने आमजन को व्यवसाय, गरीबी, धर्म एवं जाति से जोड़कर वर्णों-जातियों में बांटने की व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया। बाबा घासीदास के संदेशों का समाज के गरीब, पिछड़े समुदाय पर गहरा असर पड़ा था, और इससे धीरे-धीरे हजारों लोग जुड़ते गये। उनके सतनामी पंथ के अनुयायी लोग छत्तीसगढ़ में लोक गीत, संगीत तथा नृत्यों के जरिये बाबा घासीदास के जीवन दर्शन का समय-समय पर संगीतमय लोकभाषा में प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। छत्तीसगढ़, पंजाब तथा मध्यप्रदेश-हरियाणा में उनके द्वारा सनातन पंथ के आज लाखों अनुयायी उनके पंथ के सिद्धान्तों व विचारधारा का पालन करते है। गुरु घासीदास बहुत बड़े सामाजिक सुधारक एवं दूरदृष्टा थे। उनके पंथ के हजारों-लाखों अनुयायी सतनामी धर्म अपना कर बने। सन् 1901 की जनगणना के अनुसार सतनामी पंथ के चार लाख अनुयायी थे। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में शहीद होने वाला प्रथम व्यक्ति वीर नारायन सिंह सतनामी था। सन्त घासीदास के अनुयायी गीतों एवं वाणियों का काफी बड़ा संग्रह है।

महान् सन्त गुरु-घासीदास ने कहा कि 'मनखे-मनखे-एक समान' अर्थात् मानव -मानव एक समान है। उनका व्यक्तित्व सत्य, अहिंसा, करूणा, दया, समानता तथा भाईचारे का सन्देश देता है। उनके सिद्धान्त भगवान बुद्ध, सन्त कबीर के सिद्धान्तों से भी मेल खाते हैं। उनका परिनिर्वाण सन् 1850 ई. में हुआ था।

उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी शिक्षाओं को उनके पुत्र सन्त बालकदास ने आगे बढ़ाते हुए लोगों तक पहुँचाया था। गुरु घासीदास ने सन् 1820 में सतनाम पंथ की स्थापना की थी। इसीलिए उन्हें सतनाम पंथ का संस्थापक माना जाता है। जैतखाम अर्थात् सफेद रंग का झंडा इस पंथ वाले अपने स्थान पर फहराते हैं।

इस पंथ के लोग आपस में मिलने पर 'सतनाम' बोलकर सम्बोधन करते हैं। तत्कालीन समय में सतनामी पंथ के अनुयायी अपना पुस्तैनी चमड़े का धन्धा त्याग देने के बाद कृषि फार्म व मजदूरी करने लगे थे। गुरु घासीदास ऐसे पहले सन्त हुए, जिन्होंने देवताओं की मूर्तियों को कचरे में फैंक दिया था, तथा सतनामियों को निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापी एक ईश्वर के लिए किसी भी धार्मिक स्थलों पर नहीं जाने का सन्देश दिया था।

गुरु घासीदास जाति व्यवस्था को मानव समाज के लिए सबसे बड़ा कोढ़ मानते थे। उनकी सोच थी कि जब तक जाति व्यवस्था रूपी कोढ़, देश से खत्म नहीं होगा, तब तक राष्ट्रीय एकता नहीं बन सकती। इसके चलते अछूत-पिछड़ा समाज सम्मान की जिन्दगी जी नहीं सका है। गुरु घासीदास ने जाति विहीन समाज की रचना करने के लिए सनातनी धर्म की स्थापना की थी।

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा, उनकी स्मृति में 'सामाजिक चेतना एवं न्याय के क्षेत्र में गुरु घासीदास सम्मान' स्थापित किया है, जो प्रतिवर्ष दिया जाता है। उनकी स्मृति में विलासपुर जिला छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास सेन्ट्रल-यूनिवर्सिटी के नाम से जून 1983 में प्रारम्भ की गयी है। इसके अलावा गुरु घासीदास नेशनल पार्क कोयरा का नाम उनकी स्मृति को स्थायी बनाने के लिए रखा गया है। भारत सरकार के डाकतार विभाग ने गुरुघासीदास की स्मृति में 18 दिसम्बर, 1987 में एक विशेष डाक टिकिट जारी किया है।

इस प्रकार महान् सन्त-गुरु घासीदास के द्वारा स्थापित सतनाम पंथ के सिद्धान्त एवं विचारधारा आज भी सामयिक एवं प्रासंगिक है। ऐसे महान योगी समाज सुधारक सन्त को कोटि-कोटि नमन है।

यादराम सिंह यादव,
स्वतंत्र लेखक एवं साहित्यकार

झुंझुनूं में सरकारी विभागों पर बिजली विभाग का करीब 35 करोड़ का बकाया

झुंझुनूं, (निसं)। आम उपभोक्ता बिल की राशि समय पर जमा नहीं कराए तो उसका बिजली कनेक्शन तत्काल काट दिया जाता है। वहीं सरकारी महकमों से रिकवरी करना आर्थिक घाटे से जूझ रहे डिस्कॉम के सामने बड़ी चुनौती बना हुआ है। झुंझुनूं जिले में कुल बकाया 51 करोड़ रुपए में से 35 करोड़ से ज्यादा तो अकेले सरकारी विभागों के हैं। हालांकि डिस्कॉम ने बकाया वसूली के लिए अभियान तो शुरू कर रखा हैं। लेकिन इस अभियान में भी सरकारी विभागों से रिकवरी करना डिस्कॉम के लिए परेशानी का सबब बना हुआ हैं। जिलेभर में सरकारी महकमे बिजली का उपभोग तो कर रहे हैं, लेकिन बिल की राशि समय पर जमा नहीं करा रहे हैं। इससे हालात यह बन गए हैं कि बिजली उपभोक्ताओं पर कुल बकाया 51 करोड़ रुपए में से 35 करोड़ रुपये सरकारी विभागों में बकाया है। पीएचईडी, जनता जल योजना, नगर निकाय, ग्राम पंचायत, पुलिस सर्वाधिक बकाया वाली सूची में शामिल है। नगर निकायों में डिस्कॉम का सर्वाधिक बकाया है।

■ सरकारी विभागों से रिकवरी करना डिस्कॉम के लिए परेशानी का सबब बना

अजमेर डिस्कॉम का पीएचईडी में 11 करोड़ रुपए तो जनता जल योजना में संचालित कुओं के 3.41 करोड़ रुपए बकाया हैं। ग्राम पंचायतों में 68 लाख रुपए तो नगर निकायों में 18 करोड़ रुपए बकाया है। इसी तरह पुलिस विभाग में 8 लाख रुपए बकाया है। अन्य सरकारी महकमों में 1.64 करोड़ रुपए बकाया हैं। जिसको लेकर डिस्कॉम की टीम ने सरकारी विभागों को बकाया जमा करवाने को लेकर नोटिस थमाया है। अधीक्षण अभियंता विरेन्द्र सिंह ने बताया की बकाया वसूली को लेकर टीम बनाई गई है।

जो लगातार बकाया वसूली को लेकर फिल्ड में जुटी हुई है 31 मार्च तक बकाया वसूली को लेकर अभियान जारी रहेगा।

मनखे-मनखे एक समान का संदेश दिया, गुरु घासीदास ने

गुरु घासीदास समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था, जात-पात, छुआछूत, ऊंच-नीच, पशु-बलि, कुप्रथाओं एवं झूठ-कपट के घोर विरोधी थे। उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत की भावना के विरुद्ध मनखे-मनखे एक समान का संदेश दिया। उनकी सत्य के प्रति अटूट आस्था थी। उन्होंने समाज के लोगों को सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने न सिर्फ सत्य की आराधना की, बल्कि समाज में नई जागृति पैदा की।

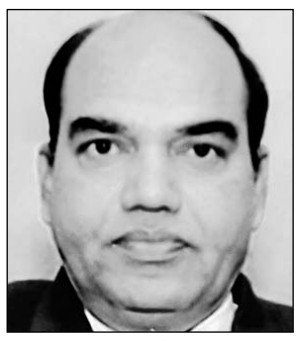

पन्नालाल मेघवाल

उन्होंने ऐसे समय में समाज को एकता, भाईचारा एवं समरसता का संदेश दिया। उनके पिताजी का नाम मंहगूदास तथा माताजी का नाम अमरौतिन था। धर्मपत्नी का नाम सफुरा था। उनके दो पुत्र बालकदास एवं अमरदास थे।

गुरु घासीदास ने अपनी तपस्या से प्राप्त ज्ञान और शक्ति का उपयोग मानवता की सेवा में किया। इस प्रभाव के चलते लाखों लोग गुरु के अनुयायी हो गए। वे बचपन से ही समाज में व्याप्त पशुबलि तथा अन्य कुप्रथाओं का विरोध करते रहे। सत्य से साक्षात्कार करना ही गुरुजी के जीवन का परम लक्ष्य था।

गुरु घासीदास की मुख्य रचनाओं में उनके सात वचन सतनाम पंथ के सप्त सिद्धांत के रूप में प्रतिष्ठित हैं। जिसमें सतनाम पर विश्वास, मूर्ति पूजा का निषेध, वर्ण भेद से परे, हिंसा का विरोध, व्यसन से मुक्ति, पर स्त्री गमन की वर्जना और दोपहर में खेत न जोतना सम्मिलित हैं।

गुरू घासीदास ने समाज में व्याप्त जातिगत विषमताओं को नकारा। उन्होंने ब्राम्हणों के प्रभुत्व को नकारा और कई वर्णों में बांटने वाली जाति व्यवस्था का विरोध किया। गुरू घासीदास ने मूर्तियों की पूजा को वर्जित किया। वे मानते थे कि उच्च वर्ण के लोगों और मूर्ति पूजा में गहरा सम्बन्ध है। सतनाम पंथ के अनुसार खेती के लिए गायों का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिये। गुरू घासीदास के संदेशों का समाज के पिछड़े समुदाय में गहरा असर पड़ा। सन् 1901 की जनगणना के अनुसार उस वक्त लगभग 4 लाख लोग सतनाम पंथ से जुड़कर उनके अनुयायी बने।

इनके द्वारा दिये गये उपदेशों से समाज के असहाय लोगों में आत्मविश्वास, व्यक्तित्व की पहचान और अन्याय से जूझने की शक्ति का संचार हुआ। छत्तीसगढ़ में इनके द्वारा प्रवर्तित सतनाम पंथ के आज भी लाखों अनुयायी हैं।

छत्तीसगढ़ सरकार ने उनके सम्मान में वर्ष 1987 में एक डाक टिकट जारी किया गया था। संजय-डुबरी टाइगर रिजर्व के एक हिस्से का नाम गुरु घासीदास के नाम पर रखा गया था। इसके हिस्से को अब गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान कहा जाता है। उनके नाम पर एक केंद्रीय विश्वविद्यालय का नाम भी गुरु घासीदास विश्वविद्यालय रखा गया।

गुरु घासीदास का जीवन-दर्शन युगों तक मानवता का संदेश देता रहेगा। इनका व्यक्तित्व ऐसा प्रकाश स्तंभ है, जिसमें सत्य, अहिंसा, करुणा तथा जीवन का ध्येय उदात्त रुप से प्रकट है। छत्तीसगढ़ शासन ने उनकी स्मृति में सामाजिक चेतना एवं सामाजिक न्याय के क्षेत्र में गुरु घासीदास सम्मान स्थापित किया है।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

भगवान जगन्नाथ के वार्षिकोत्सव में उमड़े श्रद्धालु

श्रद्धालुओं ने मांगी मन्नतें, कढ़ी बाजरे की प्रसादी का उठाया लुफ्त।

कोटपूतली, (निसं)। नारेहडा-पावटा मार्ग से करीब 2 किलोमीटर पश्चिम दिशा में पहाड़ियों के बीच स्थित ग्राम पुरुषोत्तमपुरा के प्राचीन भगवान श्री जगन्नाथ का शनिवार को विशाल मेला एवं भंडारा लगा।

मेले में लाखों श्रद्धालुओं ने भगवान श्री जगन्नाथ के प्रसाद चढ़ाकर धोक लगाई व मन्नतें मांगी। इस मौके पर मंदिर परिसर को विशेष रूप से सजाया गया। मेले में लगी स्टालों पर महिल-पुरुषों और बच्चों ने जरूरतमंद सामान की खरीददारी की। सुबह 9 बजे कढ़ी बाजरे की प्रसादी का सबसे पहले भगवान श्री जगन्नाथ की प्रतिमा को भोग लगाया गया। इसके बाद प्रसादी दिन भर मेले में आने वाले भक्तों को वितरित की गई।

शाम 06 बजे भगवान जगन्नाथ की महाआरती उतारी गई। इस मौके पर जयपुर ग्रामीण सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, भाजपा नेता मुकेश गोयल, पूर्व संसदीय सचिव रामस्वरूप कसाना, वरिष्ठ भाजपा नेता शंकर लाल कसाना, पूर्व प्रधान विक्रम सिंह तंवर, भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश मंत्री विनोद सिंह तंवर, ने भी शिरकत की।

मेले की खास बात यह है मेले वाले दिन उड़ीसा के भगवान जगन्नाथ को लगाए जाने वाला भोग की बजाए यहां भोग लगता हैं। जिस दिन यहां मेला भरता है उस दिन उड़ीसा में स्थित जगन्नाथ धाम के पट बंद रहते हैं। गांव में पौष माह कृष्ण पक्ष की नवमी को भरने वाले मेले में कोलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली, पंजाब सहित अनेक प्रदेशों के भक्तजन आते हैं।

राशिफल रविवार 18 दिसम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, हस्त नक्षत्र प्रातः 10:18 तक, शोभन योग प्रातः 5:23 तक, वणिज करण दिन 3:37 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10:30 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 10:18 तक है। आज भद्रा दिन 3:37 से रात्रि 3:33 तक है। आज श्री पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन) है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 8:31 से 9:48 तक, लाभ-अमृत 9:48 से 12:33 तक, शुभ 1:40 से 2:58 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:14, सूर्यास्त 5:32

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। पारिवारिक कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वभाव पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कर्क
आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है और अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बनेंगे।

सिंह
आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। अनावश्यक धन हानि हो सकती है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ बनी रहेगी। मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

धनु
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। शुभ कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मीन
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बनेंगे। परिव